



DR. BANDI RAMAKRISHNA REDDY

Dr. Bandi Ramakrishna Reddy a former Professor of Linguistics at the Osmania and P.S. Universities Hyderabad; the founder Registrar of Dravidian University, Kuppam and a close associate and the 37th President of Dravidian Linguistics Association, is a noted linguist.

2. Born on 12th August 1942, Dr. Reddy completed his schooling, Graduation and Post-Graduation in Hindi Language and Literature from Sri Venkateswara University, Tirupati in 1972. He was awarded the Prestigious Commonwealth Scholarship by the Association of Commonwealth Universities London for his doctoral studies in Linguistics. He was awarded the honorary degree of Doctor of Letters (D.Litt) by the Deccan College Post Graduate and Research Institute, Pune.

3. Dr. Reddy speaks Hindi, Tamil, Kannada and many other Dravidian Tribal Languages besides his mother tongue Telugu. During 1970-72, he worked at Central Institute of Indian Languages (CIIL), Mysore. He has conducted a number of fieldworks during this period on Kuvi, (UNESCO) listed language as a definitely endangered.

4. Dr. Reddy has been involved in organising National and Regional seminars and conferences which provided an opportunity to many scholars to participate and express their ideas. He was particularly interested in collecting the then forth coming new ways of interpreting the tribal data for the implementation of new ideas / ways of thinking in writing the data collected from the Tribal languages. His interpretation and commentary of tribal data has led many scholars to work on Tribal languages.

5. Dr. Reddy's extensive fieldwork among Kuvi speakers came out as Kuvi Phonetic Reader in 1974 and Kuvi Folk Literature with Oriya and English. He has shown interest on another UNESCO listed critically endangering language MANDA. He published a Manda-English Dictionary and Manda- Oral Literature in 2009. He identified another independent Dravidian Language Indi/Awe spoken in Rayada District of Odisha. He pioneered Editorial Attempt Agreement in Dravidian Languages (2003) published by International Institute of Tamil Studies, Chennai.

6. Dr. Reddy has edited 4 volumes of Osmania Paper in Linguistics Volumes 4 to 7, 1978-81, Kuvi - Origin-English Dictionary in 1995 (Trilingual) and Dravidian Folk and Tribal Lore in 2001.



डॉ. बंडी रामकृष्ण रेड्डी

डॉ. बंडी रामकृष्ण रेड्डी हैदराबाद के उस्मानिया और पीएस विश्वविद्यालयों में भाषा विज्ञान के पूर्व प्रोफेसर; द्रविड़ विश्वविद्यालय, कुप्पम के संस्थापक रजिस्ट्रार और एक करीबी सहयोगी और द्रविड़ भाषा विज्ञान संघ के 37वें अध्यक्ष और एक प्रसिद्ध भाषाविद् हैं।

2. 12 अगस्त, 1942 को जन्मे, डॉ. रेड्डी ने 1972 में श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति से हिंदी भाषा और साहित्य में अपनी स्कूली शिक्षा, स्नातक और स्नातकोत्तर की शिक्षा पूरी की। उन्हें भाषा विज्ञान में डॉक्टरेट अध्ययन के लिए एसोसिएशन ऑफ कॉमनवेल्थ यूनिवर्सिटीज लंदन द्वारा प्रतिष्ठित राष्ट्रमंडल छात्रवृत्ति प्रदान की गई थी। उन्हें डेक्कन कॉलेज पोस्ट ग्रेजुएट एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट, पुणे द्वारा डॉक्टर ऑफ लेटर्स (डी.लिट) की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया था।

3. डॉ. रेड्डी अपनी मातृभाषा तेलुगु के अलावा हिंदी, तमिल, कन्नड़ और कई अन्य द्रविड़ जनजातीय भाषाएं बोलते हैं। 1970-72 के दौरान, उन्होंने सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन लैंग्वेजेज (सीआईआईएल), मैसूर में कार्य किया। उन्होंने इस अवधि के दौरान यूनेस्को में सूचीबद्ध लुप्त प्राय भाषा कुवी पर कई फील्डवर्क किए हैं।

4. डॉ. रेड्डी राष्ट्रीय और क्षेत्रीय सेमिनारों और सम्मेलनों के आयोजन में शामिल रहे हैं, जिनमें अनेक विद्वानों को भाग लेने और अपने विचार व्यक्त करने का अवसर मिला। वह विशेष रूप से जनजातीय भाषाओं से एकत्र किए गए आंकड़ों को लिखने में नए विचारों/सोचने के तरीकों को अमल में लाने के लिए जनजातीय डेटा की व्याख्या करने के भावी नए तौर-तरीकों के संग्रहण करने में रुचि रखते थे। आदिवासी आंकड़ों की उनकी व्याख्या और टिप्पणी ने कई विद्वानों को जनजातीय भाषाओं पर काम करने के लिए प्रेरित किया है।

5. डॉ. रेड्डी के व्यापक फील्डवर्क से कुवी बोलने वालों के बीच 1974 में कुवी फोनेटिक रीडर तथा उड़िया और अंग्रेजी के साथ कुवी लोक साहित्य सामने आया। उन्होंने एक अन्य यूनेस्को सूचीबद्ध भाषा मांडा के प्रति रुचि प्रदर्शित की है, जो गंभीर रूप से लुप्त होने के कगार पर है। उन्होंने 2009 में एक मांडा-अंग्रेजी शब्दकोश और मांडा-ओरल लिटरेचर प्रकाशित किया। उन्होंने ओडिशा के रायडा जिले में बोली जाने वाली एक और स्वतंत्र द्रविड़ भाषा इंडी/एवे की पहचान की। वह इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ तमिल स्टडीज, चेन्नै द्वारा प्रकाशित द्रविड़ भाषाओं में संपादकीय प्रयास समझौते (2003) में अग्रणी रहे।

6. डॉ. रेड्डी ने 1978-81 में भाषाविज्ञान में उस्मानिया पेपर के खंड 4 से लेकर 7 तक के खंड, 1995 में कुवी-ओरिजिन-इंग्लिश डिक्शनरी (त्रिभाषी) और 2001 में द्रविड़ लोक और जनजातीय विद्या के 4 खंड का संपादन किया है।